# विस्थापित परिवारों की समस्याएँ

***वीरेन्द्र सिंह,***

*शोध छात्र समाजशास्त्र विभाग, राधेहरि राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, काशीपुर*

**शोध सारांश**

*भारत में विस्थापन आजादी के बाद से ही चला आ रहा है। आजादी के बाद भारत में विस्थापन भारत और पाकिस्तान से आये लोगों के बीच काफी मात्रा में देखा गया, भारत में आजादी के बाद विकास को लेकर भी काफी बड़ी मात्रा में विस्थापन की स्थिति पैदा हो गई, विकास के परियोजनाओं के चलते जैसे– बाँध, पुलों का निर्माण आदि के कारण भी विस्थापन देखा गया है। विस्थापन के कारण विस्थापित परिवारों में सामाजिक, सांस्कृतिक प्रस्थिति में भी परिवर्तन हो रहा है। विस्थापन से पूर्व मनुष्य की सामाजिक स्थिति मजबूत रहती है। वह अपने जीवन से सम्बन्धित सभी कार्यों, कृषि, रोजगार व व्यापार से अपनी जीविका चलाता है जिससे सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति मजबूत रहती है। कहा गया है कि "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।" उसे अपने जन्म से मृत्यु तक सभी सामाजिक कार्य करने पड़ते हैं। सामाजिक सदस्यों के बीच पाये जाने वाले पारस्परिक सम्बन्धों की व्यवस्था को ही "समाज" कहते हैं और साथ में लोग आपस में एकाधिक सम्बन्धों को स्थापित कर लेते हैं। सम्बन्धों के आधार पर एक दूसरे से बंध जाते हैं। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं नहीं कर सकता, वह दूसरों की मदद और सहयोग लेता है। आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वह दूसरों से सम्बन्धित या जुड़ जाते हैं। सम्बन्ध विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं के आधार पर होते हैं जैसे– पारिवारिक, धार्मिक, आर्थिक, यौन व राजनीतिक। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में असंख्य सम्बन्धों का जाल बिछा हुआ है।*

***मूलभूत अवधारणाएं –*** *विस्थापित, समस्याएं, परिवार।*

मैकाइवर और पेज के अनुसार– "समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है।"[1]

रयूट्र के अनुसार– "समाज एक अर्मूत शब्द है जो एक समूह के सदस्यों एंव उन सदस्यों के बीच जो जटिल पारस्परिक सम्बन्ध पाये जाते हैं उनका बोध कराता है।"[2]

समाज एक मजबूत इकाई है। जिसमें रहकर सभी मनुष्यों को अपने सामाजिक कार्यों का निर्वाह करना पड़ता है। मनुष्य सामाजिक कार्यों को अपनी "संस्कृति" के आधार पर करता है। संस्कृति मानव समाज की महत्वपूर्ण विशेषता है। संस्कृति का सम्बन्ध मानव जीवन के अनेक पक्षों में पड़ता है। संस्कृति को अंग्रेजी भाषा में (Culture) मनुष्य संस्कृति के आधार पर कार्य करता है।

किंग्सले डेविस ने लिखा है कि "यदि कोई एक ही कारण मनुष्य के अनूठेपन की व्याख्या कर सकता है तो वह तत्व यह है कि मनुष्य और केवल मनुष्य में ही संस्कृति पाई जाती है।"[3]

'संस्कृति' शब्द की व्युत्पत्ति 'संस्कृत' शब्द से ही मानी जाती है। 'संस्कृति' एवं 'संस्कृत' दोनों ही शब्द 'संस्कार' से बने हैं। संस्कार का अर्थ 'कृत्यों' की पूर्ति करना है।

एडवर्ड टायलर ने अपनी कृति 'प्रिमिटिव कल्चर' में संस्कृति के बारे में लिखा है कि "संस्कृति वह जटिल समग्रता है। जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आधार, कानून, प्रथा और ऐसी ही अन्य क्षमताओं एवं आदतों का समावेश होता है जिसे मनुष्य समाज का एक सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है।"[4]

मनुष्य समाज, सामाजिक क्रियाओं तथा संस्कृति के आधार पर ही समस्त क्रिया–कलापों को करता आ रहा है तथा उसकी अपनी एक संस्कृति होने की वजह से पहचान होती है। विस्थापित परिवारों में अनेक सामाजिक समस्याओं का जन्म होता है। विस्थापन के कारण जैसे– घरेलू तनाव, हिंसा पैदा हो जाती है। आर0 एन0 त्रिपाठी ने "इण्डियन सोशियल प्राबलम्स" में कहा है कि वैवाहिक समस्याऐं पुरूषों और महिलाओं या विपरीत लिंग के बीच तनाव की समस्याएं है, ये वैज्ञानिक असंगठिता और तनाव को जन्म देते हैं जिसके परिणामस्वरूप अपराध और नशे की समस्याऐं पैदा हो जाती है।"[5]

विस्थापित परिवारों में विस्थापन के पश्चात् सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थियों में परिवर्तन बहुतायत दिखायी देता है। जिसके कारण परिवारों का जीवन पूर्ण रूप से अस्त व्यस्त हो जाता है और कई बार विस्थापित परिवार के लोग अपने को असहाय सा समझते हैं और नये तरीके से अपना जीवन यापन करते हैं और अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति को मजबूत बनाते हैं।

**उद्देश्य** – प्रस्तुत प्रपत्र का उद्देश्य विस्थापित परिवारों की विभिन्न प्रकार की समस्याओं का अध्ययन करना है।

## समग्र एवं अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन का समग्र रामनगर ब्लाक है। इस विकासखण्ड में 53 ग्राम सभाएं हैं। इनमें से ग्राम प्रतापपुर एवं ग्राम मानपुर का अध्ययन किया गया है। ग्राम प्रतापपुर में 297 तथा ग्राम मानपुर में 209 विस्थापित परिवार हैं, जो पौड़ी गढ़वाल के कोटद्वार तहसील से विथापित होकर रामनगर विकास खण्ड के इन ग्रामों में प्रवासित हैं। कुल 501 विथापित परिवारों में से 50 प्रतिशत परिवारों का चयन नियमित अंकन प्रणाली द्वारा चयन कर अध्ययन को मूर्त रूप प्रदान किया गया। विस्थापित परिवारों के मुखिया को अध्ययन की इकाई माना गया। तथ्यों का संकलन साक्षात्कार–अनुसूची द्वारा किया गया साथ ही द्वैतीयक तथ्यों का भी प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में अन्वेषणात्मक एवं विवेचनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

## उत्तरदाताओं के रहन सहन पर प्रभाव का विवरण

विस्थापन के बाद विस्थापित परिवारों के रहन सहन में बदलाव आया है, क्योंकि उत्तरदाता पूर्व में जिम कार्बेट के अन्तर्गत वन ग्रामों में निवास करते थे। परन्तु वर्तमान समय में वह नैनीताल जनपद के रामनगर तहसील के अन्तर्गत बसे हैं जिससे उनके जीवन का स्तर ऊंचा हुआ है। रहन–सहन को निम्नलिखित सारणी के आधार पर दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या– 1**

**उत्तरदाताओं के रहन–सहन पर प्रभाव का विवरण**

| क्र.स. | विवरण (रहन–सहन पर प्रभाव) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | पूर्ण सहमत | 65 | 26 |
| 2. | सहमत | 95 | 38 |
| 3. | असहमत | 52 | 21 |
| 4. | पूर्ण सहमत | 38 | 15 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–1 से स्पष्ट है कि 26 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 65 है पूर्ण सहमत, 38 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 95 है सहमत, 21 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 52 है असहमत तथा 15 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 38 है पूर्ण असहमत हैं। परिवार की आर्थिक स्थिति में वृद्धि हुई है तो वह रहन–सहन की स्थिति में बेहतर स्थान प्रदान करती है।

## सामाजिक जीवन में सुधार की स्थिति का विवरण

विस्थापन से सामाजिक जीवन में सुधार की स्थिति पैदा हुई है। विस्थापन से 65 प्रतिशत उत्तरदाताओं के जीवन में सुधार आया है जबकि 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि उनके सामाजिक जीवन में विस्थापन के कारण कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। शेष 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना था कि इस सम्बन्ध में कुछ कहा नहीं जा सकता।

**सारणी संख्या–2**

**सामाजिक जीवन में सुधार की स्थिति का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (सामाजिक जीवन में सुधार की स्थिति) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | जीवन में सुधार आया | 163 | 65 |
| 2. | जीवन में सुधार नहीं आया | 75 | 30 |
| 3. | अनिश्चित | 12 | 05 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या 2 से स्पष्ट होता है कि 65 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–163 है, के जीवन में सुधार आया, 30 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–75 है, के जीवन में सुधार नहीं

आया तथा 5 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–12 है, अनिश्चित हैं।

## सामाजिक विचारों पर प्रभाव का विवरण

सामाजिक क्रियाकलापों के चलते हुऐ विचारों में परिवर्तन को देखा जाता है। विस्थापन के बाद अधिकतम लोगों में विचार प्रगतिशील व सकारात्मक हुए हैं। शिक्षा और सामाजिक कार्यों में उन्नति हुई है। जिसे निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–3**

**उत्तरदाताओं के सामाजिक विचारों पर प्रभाव का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (उत्तरदाताओं के सामाजिक विचारों पर प्रभाव) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | पूर्ण सहमत | 84 | 34 |
| 2. | सहमत | 71 | 28 |
| 3. | असहमत | 53 | 21 |
| 4. | पूर्ण असहमत | 42 | 17 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–3 से स्पष्ट है कि 34 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–84 है, पूर्ण सहमत हैं, 28 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–71 है सहमत, 21 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–53 है असहमत तथा 17 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 42 है, पूर्ण असहमत हैं। 62 प्रतिशत उत्तरदाता पूर्ण सहमत, सहमत थे। जिनके विचारों में उन्नति थी। 38 प्रतिशत उत्तरदाता असहमत और पूर्ण रूप से असहमत विचार के थे।

## शिक्षा ग्रहण करने पर प्रभाव का विवरण

विस्थापित परिवारों में शिक्षा के प्रति वर्तमान समय में काफी रूझान देखा गया है। गांव में सभी बालक व बालिकाऐं शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। शिक्षा प्राचीन समय से वर्तमान समय तक विकास की ओर अग्रसर हो रही है। शिक्षा के द्वारा नौकरी के नये–नये आयाम सामने आये हैं। निम्नलिखित सारणी में शिक्षा ग्रहण करने पर प्रभाव को दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–4**

**उत्तरदाताओं का शिक्षा ग्रहण करने पर प्रभाव का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण(उत्तरदाताओं का शिक्षा ग्रहण करने पर प्रभाव) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | पूर्ण सहमत | 85 | 34 |
| 2. | सहमत | 98 | 39 |
| 3. | असहमत | 53 | 21 |
| 4. | पूर्ण असहमत | 14 | 06 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–4 से स्पष्ट है कि 34 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या 85 है शिक्षा ग्रहण करने के प्रति पूर्ण सहमत हैं। 39 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या 98 है शिक्षा ग्रहण करने के प्रति सहमत हैं। 21 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या 53 है शिक्षा ग्रहण करने के प्रति असहमत हैं जबकि 6 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या 14 है शिक्षा ग्रहण करने के प्रति पूर्ण असहमत हैं।

## सामुदायिक अवसरों में प्रतिभाग का विवरण

विस्थापन लोगों के स्थानीय अवसरों में प्रतिभाग करने की प्रवृत्ति को प्रभावित करता है क्योंकि गांव से दूरी, यातायात के साधनों की कमी, समय का अभाव आदि इस प्रवृत्ति को नियन्त्रित करती है। निम्न सारणी में सामुदायिक अवसरों में प्रतिभाग को दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–5**

**सामुदायिक अवसरों में प्रतिभाग का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (सामुदायिक अवसरों में प्रतिभाग) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | पूर्ण सहमत | 65 | 26 |
| 2. | सहमत | 88 | 35 |
| 3. | असहमत | 56 | 23 |
| 4. | पूर्ण असहमत | 41 | 16 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–5 से स्पष्ट है कि 35 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–88 है सामुदायिक अवसरों में प्रतिभाग से सहमत हैं, 26 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–65 है सामाजिक कार्यों से सहमत हैं जबकि 16 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–41 है पूर्ण असहमत हैं

तथा 23 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–56 है असहमत है जो सामुदायिक कार्यों में हिस्सा लेना चाहते हैं परन्तु किसी कारणवश नहीं ले पाते हैं।

## विस्थापन से आत्मविश्वास पर प्रभाव का विवरण

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत जब उत्तरदाताओं से यह पूछा गया कि विस्थापन ने उनके आत्मविश्वास को प्रभावित किया है। 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह मानना है कि विस्थापन के बाद उनके आत्मविश्वास मे परिवर्तन आया है। निम्न सारणी में विस्थापन से आत्मविश्वास पर प्रभाव का विवरण दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–6**

**उत्तरदाताओं के आत्मविश्वास पर प्रभाव का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (उत्तरदाताओं के आत्मविश्वास पर प्रभाव) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | पूर्ण सहमत | 90 | 36 |
| 2. | सहमत | 60 | 24 |
| 3. | असहमत | 68 | 27 |
| 4. | पूर्ण असहमत | 32 | 13 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–6 से स्पष्ट है कि 36 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 90 है पूर्ण सहमत, 24 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 24 है सहमत है। 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के आत्म–विश्वास में परिवर्तन आया है। 27 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 68 है असहमत, 13 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 32 है पूर्ण असहमत हैं। 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह मानना है कि उनके आत्मविश्वास में परिवर्तन नहीं आया है। उसका कारण सामुदायिक कार्यों में भाग नहीं लेना है। सामुदायिक कार्यों में प्रतिभाग करने से विचार–विमर्श, विचारों का आदान–प्रदान सम्बन्धों से आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

## उत्तरदाताओं की जीवन–शैली पर प्रभाव का विवरण

विस्थापन के बाद विस्थापित परिवारों की जीवन–शैली में बदलाव की स्थिति दिखायी देती है तथा जीवन शैली में परिवर्तन आया है। निम्न सारणी में उत्तरदाताओं की जीवन शैली पर प्रभाव के विवरण को दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–7**

**उत्तरदाताओं की जीवन–शैली पर प्रभाव का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (उत्तरदाताओं की जीवन–शैली पर प्रभाव) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हाँ | 185 | 74 |
| 2. | नहीं | 65 | 26 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–7 से स्पष्ट है कि 26 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 65 है, का मानना है कि उनकी जीवन शैली में परिवर्तन नहीं आया है जबकि 74 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 185 है, का मानना है कि उनकी जीवन शैली में खान–पान, पहनावे, रहन–सहन, घरेलू जीवन व सुख–सुविधाओं में परिवर्तन आया है।

## उत्तरदाताओं की बोली (भाषा) का विवरण

उत्तरदाताओं की बोली भाषा जो कि वह अपने जीवन में बोलते हैं और बोली के आधार पर ही सामाजिक कार्यों का निर्वाह करते हैं। ग्रामीण स्तर पर ज्यादातर उनकी स्थानीय बोली गढ़वाली व कुमाऊँनी का उपयोग उनके द्वारा किया जाता है। निम्न सारणी में उत्तरदाताओं की भाषा का विवरण दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–8**

**उत्तरदाताओं की भाषा का विवरण**

| क्र0 सं0 | विवरण (भाषा) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | गढ़वाली | 90 | 36 |
| 2. | कुमाऊंनी | 60 | 24 |
| 3. | देशी | 55 | 22 |
| 4. | अन्य | 45 | 18 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–8 से स्पष्ट है कि 24 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–60 है, कुमाँऊनी बोली (भाषा) को बोलते हैं। 36 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–90 है, गढ़वाली भाषा को बोलते हैं। 22 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–55 है, देशी भाषा का प्रयोग करते हैं तथा शेष 18 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–45 है, अन्य भाषा का प्रयोग करते हैं। अतः अधिकांश उत्तरदाता अपनी स्थानीय भाषा को बोलकर ही अपना कार्य करते हैं।

## उत्तरदाताओं की उपलब्धि स्तर का विवरण

गांव में निवास कर रहे ग्रामीण व्यक्तियों के उपलब्धि स्तर विस्थापन के बाद बढ़ा है। उन्होंने उपलब्धियों को बढ़ाया है। निम्न सारणी में उपलब्धि स्तर के विवरण को दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–9**

**उत्तरदाताओं की उपलब्धि स्तर का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (उपलब्धि स्तर) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | सन्तोषजनक | 92 | 37 |
| 2. | सामान्य | 32 | 13 |
| 3. | असन्तोषजनक | 86 | 34 |
| 4. | अनिश्चित | 40 | 16 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–9 से स्पष्ट है कि 37 प्रतिशत उत्तरदाताओं को सन्तोष है कि विस्थापन के बाद उनके स्वयं की उपलब्धि का स्तर बढ़ा है। जबकि 13 प्रतिशत सामान्य ही मानते हैं। 34 प्रतिशत ने असन्तोष प्रकट किया और 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे अनिश्चित माना है।

## परिवार के अन्दर उत्तरदाताओं का प्रभाव का विवरण

परिवार के अन्दर जो भी बात कही या सुनी जाती है। वह मुखिया के द्वारा होती है। मुखिया परिवार का संचालन करता है। संचालन में वह आर्थिक रूप से सभी सदस्यों की मदद करता है। निम्न सारणी में परिवार के अन्दर उत्तरदाताओं का प्रभाव का विवरण दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–10**

**परिवारों के अन्दर उत्तरदाताओं का प्रभाव का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण(परिवार के अन्दर उत्तरदाताओं का प्रभाव) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | पूर्ण सहमत | 100 | 40 |
| 2. | सहमत | 50 | 20 |
| 3. | असहमत | 65 | 26 |
| 4. | पूर्ण असहमत | 35 | 14 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–10 से स्पष्ट है कि 60 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–150 है, पूर्ण सहमत व सहमत है कि विस्थापन के बाद परिवार के लोग उनकी बातों को महत्व देते हैं। 40 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–100 है, असहमत व पूर्ण असहमत हैं। जो परिवार की बातों को महत्व नहीं देते हैं वास्तव में यह सामान्य सी बात है कि यदि कोई व्यक्ति परिवार की आर्थिकी का केन्द्र है तो उसकी सभी बातें परिवार में महत्व रखती है।

## पारिवारिक प्रतिष्ठा पर प्रभाव का विवरण

विस्थापन के बाद विस्थापित परिवारों की सम्पूर्ण पारिवारिक स्थिति में परिवर्तन देखने को मिलता है तथा पारिवारिक प्रतिष्ठा पर प्रभाव भी दिखाई देता है। निम्न सारणी मे पारिवारिक प्रतिष्ठा पर प्रभाव के विवरण को दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–11**

**उत्तरदाताओं की पारिवारिक प्रतिष्ठा पर प्रभाव का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (पारिवारिक प्रतिष्ठा) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | पूर्ण सहमत | 127 | 51 |
| 2. | सहमत | 63 | 25 |
| 3. | असहमत | 35 | 14 |
| 4. | पूर्ण असहमत | 25 | 10 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–11 से स्पष्ट है कि 76 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–190 है, पूर्ण सहमत व सहमत हैं। विस्थापन के बाद भी परिवार में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी है और 24 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–60 है, असहमत, पूर्ण असहमत हैं। परिवार की प्रतिष्ठा का मुख्य कारण आर्थिकी, शैक्षिक योग्यता, रहन–सहन, सुख–सुविधाऐं में सुधार आदि को माना जाता है।

## सांस्कृतिक प्रभाव का विवरण

संस्कृति मानव समाज की महत्वपूर्ण विशेषता है। जिनका सम्बन्ध मानव जीवन के अनेक पक्षों से होता है। मानव समाज में ही सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यों का निर्वाह करता है। मनुष्य और संस्कृति का सम्बन्ध दोहरा माना जाता है। जहाँ एक और मनुष्य संस्कृति का निर्माता है। वही दूसरी और वह स्वयं संस्कृति की उपज है। न तो संस्कृति के बिना मनुष्य है और न ही मनुष्य के बिना संस्कृति। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के पूरक कहे जाते हैं। संस्कृति कोई शून्य में उत्पन्न नहीं होती और न ही प्रकृति ने संस्कृति को बनाया, मनुष्य ने ही अपनी अद्भुत शक्ति एवं क्षमता के आधार पर संस्कृति का निर्माण किया है। संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती है।

प्रस्तुत अध्याय में ग्रामीण क्षेत्रों मे हुये विस्थापन को देखते हुए उन क्षेत्रों के सांस्कृतिक बदलावों को समझने का प्रयास किया गया है। विस्थापन के बाद भी संस्कृति में सुधार आता है।

**सारणी संख्या–12**

**उत्तरदाताओं के परिवारों की सांस्कृतिक प्रभाव की स्थिति का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण(परिवारों की सांस्कृतिक प्रभाव की स्थिति) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | सांस्कृतिक स्थिति में सुधार | 173 | 69 |
| 2. | कोई सुधार नहीं | 35 | 14 |
| 3. | अनिश्चित | 42 | 17 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–12 से स्पष्ट है कि 69 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–173 है, का मानना है कि सांस्कृतिक स्थिति में सुधार आया है। 17 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–42 है, सांस्कृतिक के बारे में अनिश्चित हैं। जबकि 14 प्रतिशत उत्तरदाताओं जिनकी संख्या–35 है, का मानना है कि सांस्कृतिक स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। विस्थापन के बाद धीरे–धीरे वह पुनः सांस्कृतिक कार्यक्रमों में सुधार ला रहे हैं और उनकी सांस्कृतिक स्थिति में सुधार हुआ है।

## वेश–भूषा का विवरण

व्यक्ति जिस परिवार में जन्म लेता है। वही पर वह सब सामाजिक कार्यों से जुड़ा रहता है। सामाजिक क्रियाकलापों में वह अपने पहनावे को सीखता और अपनाता है। वेश–भूषा से ही व्यक्ति की पहचान होती है। निम्न सारणी में उत्तरदाताओं की वेश–भूषा के बारे मे विवरण दिया गया है।

**सारणी–संख्या–13**

**उत्तरदाताओं की वेश–भूषा का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (उत्तरदाताओं की वेश–भूषा) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हाँ | 181 | 72 |
| 2. | नहीं | 37 | 15 |
| 3. | कोई उत्तर नहीं | 32 | 13 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–13 से स्पष्ट है कि 72 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि वे अपनी वेश–भूषा के आधार पर कार्यो को करते हैं और अपने पहनावे को धारण करते हैं। 13 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में कोई उत्तर नहीं दिया जिनकी संख्या–32 है तथा 15 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कोई जवाब नहीं है। आज के व्यस्त जीवन के चलते व्यक्ति वेश–भूषा जो उनकी संस्कृति के अनुरूप है, उसे नहीं अपनाते हैं। लेकिन ज्यादातर ग्रामवासी अपनी संस्कृति के आधार पर वेश–भूषा अपनाते हैं।

## खान पान पर प्रभाव का विवरण

वर्तमान व्यस्त जीवन प्रक्रिया के चलते लोग अपनी मूल संस्कृति के खान–पान को भूलते जा रहे हैं। विस्थापित परिवार में विस्थापन के चलते

नई जगह पर उनकी पुरानी पैदावार न होने के कारण भीखान–पान पर प्रभाव दिखाई देता है। परन्तु ग्रामीण व्यक्ति अभी भी अपनी आय के अनुरूप अपना खान–पान करते हैं। निम्न सारणी में खान–पान का विवरण दिया गया है।

**सारणी संख्या–14**

**उत्तरदाताओं के खान–पान पर प्रभाव का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (खान–पान) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हाँ | 180 | 72 |
| 2. | नहीं | 37 | 15 |
| 3. | कोई उत्तर नहीं | 33 | 13 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–14 से स्पष्ट है कि 72 प्रतिशत उत्तरदाता अपने खान–पान को अपनी संस्कृति के अनुरूप अपनाते हैं, जिनकी संख्या–180 है। 13 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी संस्कृति के अनुसार खान–पान के बारे में कुछ नहीं कहा जबकि 15 प्रतिशत जिनकी संख्या–37 है, अपनी संस्कृति के अनुरूप खान–पान को जानते ही नहीं उसका कारण नयी पीढ़ी वर्तमान समय के अनुसार खान–पान रखते हैं।

## मूल–त्यौहार का विवरण

नैनीताल जनपद में कुमाऊंनी, गढ़वाली और अन्य धर्मों के लोग निवास करते हैं। जो अपनी मूल संस्कृति, त्यौहार को मानते हैं। इन त्यौहार को मनाने में इन्हें अपना एक अलग ही मजा आता है। यह त्यौहार इनकी मूल संस्कृति से जुड़े रहते हैं। कुमाऊँ क्षेत्र में हरेला, घुघुतिया तथा गढ़वाल में फूलदेई व मकर संक्रान्ति का त्यौहार संस्कृति से जुड़े हैं। निम्न सारणी में मूल–त्यौहार का विवरण दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–15**

**उत्तरदाताओं के मूल त्यौहार का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (मूल–त्यौहार) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हाँ | 195 | 78 |
| 2. | नहीं | 25 | 10 |
| 3. | कोई उत्तर नहीं | 30 | 12 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–15 से स्पष्ट है कि 78 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–195 है, वह आज भी अपनी मूल संस्कृति के त्यौहार को मानते हैं जबकि 12 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–30 है, का कोई जवाब नहीं तथा शेष 10 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–25 है, उन्होंने मूल त्यौहार के बारे में कुछ नहीं कहा है।

## लोक–नृत्यों का विवरण

परिवारों में विस्थापन के पूर्व व पश्चात भी लोक नृत्यों को घरों में शुभ अवसरों पर किये जाते हैं या फिर धार्मिक कार्यों पर लोक नृत्यों को किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी लोक नृत्यों को महत्व दिया जाता है। लोक नृत्यों को गीतों व वाद्य यन्त्रों के साथ सम्पन्न किया जाता है। ग्रामीणवासी आज भी लोक नृत्यों को करते हैं। निम्न सारणी में लोक नृत्यों का विवरण दिया गया है।

**सारणी संख्या–16**
**उत्तरदाताओं के द्वारा लोक नृत्यों का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (लोक नृत्यों) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हाँ | 171 | 68 |
| 2. | नहीं | 29 | 12 |
| 3. | कोई उत्तर नहीं | 50 | 20 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–16 से स्पष्ट है कि 68 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–171 है, लोक नृत्यों को आज भी घरों में शुभ अवसरों पर करते हैं। 20 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–50 है, ने लोक नृत्यों के बारे में कोई उत्तर नहीं दिया जबकि 12 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–29 है, को लोक नृत्यों की जानकारी नहीं है। उसका कारण आज का व्यस्त जीवन व अजीविका को बताया है।

## लोक–कलाओं का विवरण

विस्थापित परिवारों में विस्थापन के बाद भी गांव के घरों में लोक कलाओं को ज्यादा देखा जाता है। शुभ अवसरों पर गाँवों में ऐपण जो गेम के ऊपर चावल को पीसकर लेप कर लगाये जाते हैं। साथ ही दीवारों में मोर, हाथी व अन्य देवी–देवताओं के चित्र डकेरे जाते थे। विस्थापित परिवारों में भी इन सभी लोक कलाओं का प्रयोग किया जाता है। निम्न सारणी में लोक–कलाओं का विवरण दिया गया है।

**सारणी संख्या–17**
**उत्तरदाताओं के द्वारा लोक–कलाओं का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (लोक कलाएं) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हाँ | 210 | 84 |
| 2. | नहीं | 40 | 16 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–17 से स्पष्ट है कि 84 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या 20 है, लोक कलाओं को आज भी शुभ अवसरों पर घरों में करते हैं। जबकि 16 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–40 है, लोक कलाओं को आज भी शुभ अवसरों में घरों में नहीं करते, रोजमर्रा के कार्यों में व्यस्त होने की वजह से नहीं कर पाते हैं।

## लोक संस्कृति (जागर) का विवरण

लोक संस्कृति जागर गांवो के लोग अपने घरों मे सुख व दुख में लगाते है। इसका मूल कारण होता है। उनका अपने पैतृकों को याद करना जागर मे देवी देवताओं का आहवाहन कर अपने पूर्वजों को याद करा जाता है। सुख व दुख मे सभी अवसरों मे इस कार्य को किया जाता है। लोक संस्कृति मे जागर का अपना एक अलग ही महत्व है। विस्थापित परिवारों मे लोक संस्कृति (जागर) का विवरण दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–18**

**उत्तरदाताओं का लोक, संस्कृति (जागर) का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (उत्तरदाताओं का लोक, संस्कृति (जागर) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | हाँ | 240 | 96 |
| 2. | नहीं | 10 | 04 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–18 से स्पष्ट है कि 96 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–240 है आज भी अपनी लोक संस्कृति (जागर) को घरों में लगाते है। जबकि 04 प्रतिशत उत्तरदाता लोक संस्कृति (जागर) को घरों में नहीं लगाते उसकी वजह उनके परिवारों के लोग शहरों में जीवनयापन कर रहे हैं।

## मूल–स्थान का विवरण

विस्थापित परिवारों मे विस्थापन के बाद नैनीताल के तराई क्षेत्रों (गांवो) में निवास कर रहे ज्यादातर गांववासी पहाड़ों से आये है। आज भी यहाँ निवासित व्यक्ति अपने मूल–स्थान को नही भूला पाये है। ज्यादातर ग्रामीण गढ़वाल क्षेत्र पौढ़ी जिले से यहाँ पर विस्थापन के कारण निवास कर रहे है। मूल–स्थान का विवरण निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–19**

**उत्तरदाताओं का मूल–स्थान का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (उत्तरदाताओं का मूल–स्थान का) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | गढ़वाल | 180 | 72 |
| 2. | कुमाऊँ | 60 | 24 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 3. | अन्य | 10 | 04 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–19 से स्पष्ट है कि 72 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–180 मूल स्थान गढ़वाल क्षेत्र से आये हुये है। 04 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–10 है। अन्य क्षेत्रों से नौकरी के दौरान पहाड़ी क्षेत्रों में आकर रह रहे है। जबकि 24 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी संख्या–60 कुमाँऊ क्षेत्र से आकर निवास कर रहे है। विस्थापन के बाद भी ये एक साथ निवास कर रहे है।

## विस्थापित परिवारों के स्वास्थ्य पर प्रभाव का विवरण

विस्थापन के बाद विस्थापित लोगो को एक स्थान से दुसरे स्थान पर बसा देने के कारण वातावरण का प्रभाव दिखाई देता है। परिवारों के लोगो का स्वास्थ्य नये स्थान पर जाने से खराब हो जाता है। उसका कारण हवा व पानी तथा भोजन मे बदलाव दिखायी देता है। जिससे उनका स्वास्थ्य कई बार खराब हो जाता है। निम्न सारणी मे विस्थापित परिवारों के स्वास्थ्य पर प्रभाव को दर्शाया गया है।

**सारणी संख्या–20**

**विस्थापित परिवारों के स्वास्थ्य पर प्रभाव का विवरण**

| क्र0सं0 | विवरण (स्वास्थ्य पर प्रभाव) | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | अच्छा | 160 | 64 |
| 2. | बहुत अच्छा | 30 | 12 |
| 3. | खराब | 13 | 05 |
| 4. | बहुत खराब | 47 | 19 |
| | **कुल योग** | **250** | **100** |

उक्त सारणी संख्या–20 से स्पष्ट है कि 64 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या 160 है, विस्थापन के बाद परिवार के लोगों का स्वास्थ्य अच्छा है। 12 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या 30 है, का स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। 05 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–13 है, का स्वास्थ्य खराब जबकि 19 प्रतिशत उत्तरदाता जिनकी आवृत्ति संख्या–47 है, विस्थापन के बाद विस्थापित परिवार के लोगों का स्वास्थ्य बहुत खराब है।

इस अध्ययन के अन्तर्गत उत्तरदाताओं की सामाजिक व सांस्कृतिक प्रस्थिति का अध्ययन किया गया है। विस्थापन के बाद विस्थापित परिवारों में सामाजिक सांस्कृतिक प्रस्थिति को उत्तरदाताओं के माध्यम में वर्तमान समय में इसके प्रति हो रहे परिवर्तन को दर्शाया गया है। साक्षात्कार से ज्ञात हुआ है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के रहन–सहन पर बदलाव आया है। अधिकांश उत्तरदाताओं को सामाजिक जीवन में सुधार की स्थिति पैदा हुई है। यह विस्थापन के

बाद हुआ है। इनके विचार प्रगतिशील व सकारात्मक भी हुए हैं। जिससे शिक्षा व सामाजिक कार्यों में वृद्धि हुई है। अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि 59 से 64 आयु वर्ग के अधिकांश सामुदायिक अवसरों में प्रतिभाग करते हैं। विस्थापन के बाद भी विस्थापित परिवारों ने आत्मविश्वास को बनाये रखा है और आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। इससे स्पष्ट होता है कि 59 से 68 आयु वर्ग के उत्तरदाताओं की जीवन शैली में परिवर्तन आया है जिससे सामाजिक कार्यों में बराबर कर्म करते रहते हैं। अध्ययन से ज्ञात होता है कि अधिकांश उत्तरदाता आज भी ग्रामीण कार्यों को और सामाजिक जीवन में अपनी भाषा गढ़वाली, कुमाऊंनी को बोलते हैं और कार्यों को करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि विस्थापित परिवारों मे स्थानीय भाषा का प्रयोग आज भी किया जाता है। आज भी अपने जीवन मे विकास के कार्यों को लेकर जागरूकता को अपनाया गया है। विस्थापन के बाद आज भी ग्रामीण व्यक्तियों ने उपलब्धि को बढ़ाया है। ग्रामीण विकास कार्यों में पूर्ण सहयोग किया है। 59–68 आयु वर्ग के परिवार के अन्दर उत्तरदाता अपने परिवार की बातों को मुखिया द्वारा कहे जाने पर संचालित करते हैं और मुखिया सभी सदस्यों की आर्थिक रूप से मदद भी करता है और परिवार का संचालन करता है। जिससे 150 उत्तरदाता पूर्ण सहमत और सहमत है। विस्थापन के बाद विस्थापित परिवारों मे उत्तरदाताओं की पारिवारिक प्रतिष्ठा पर प्रभाव दिखायी दिया जिससे प्रतिष्ठा भी बढ़ी है। उत्तरदाता अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा को बनाये रखने में सक्षम है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि विस्थापित परिवारों में विस्थापन के बाद सामाजिक प्रस्थिति में बदलाव आया है।

विस्थापित परिवारों मे सांस्कृतिक (संस्कृति) को आज भी ज्यादातर ग्रामीण लोगों में 59–68 आयु वर्ग में सांस्कृतिक सुधार देखने को मिला कुछ 17 प्रतिशत लोग ही हैं जो अपनी संस्कृति को आज की भाग दौड़ में भूल रहे हैं। ग्रामीण परिवारों में आज भी अधिक लोग अपनी वेश–भूषा को पूर्ण रूप से जानते हैं। शादी–विवाह या अन्य शुभ कार्यों में अपनी वेश–भूषा का पूर्ण रूप से उपयोग करते हैं। उनका पहनाव, आभूषण व वस्त्रों का प्रयोग करते है। 72 प्रतिशत उत्तरदाता अपनी वेश–भूषा का उपयोग करते हैं। व्यस्त जीवन के चलते और पैदावार जो कि उनकी मूल संस्कृति से जुड़ी है। पैदावार कम होने के कारण आज उनके खान–पान पर भी प्रभाव दिखायी देता है। पहाड़ी क्षेत्रों में जहाँ से यह मूल स्थान से जुड़े हैं। वहाँ पर ज्यादातर ग्रामीण लोग पैदावार में मँडवा, झूमर, गहत और भट्ट की पैदावार करते हैं जो कि वर्तमान समय में गांवों में बहुत कम बोई जाती है। ग्रामीण लोगों में खान–पान का विशेष ध्यान रखा जाता है। आज भी अपनी मूल संस्कृति से जुड़े होने पर खान–पान के बारे में 72 प्रतिशत उत्तरदाता आज भी जानते हैं।

सांस्कृतिक स्तर पर विस्थापित परिवारों के विस्थापन के बाद जीवन में बदलाव आया है। इनके रहन–सहन का स्तर बदला है। 59–68 आयु वर्ग के उत्तरदाता जिनकी 62 प्रतिशत जीवन में रहन–सहन में बदलाव दिखायी दिया है। विस्थापन के बाद भी विस्थापित परिवारों में मूल त्यौहार गढ़वाल व कुमाऊँ के लोग जैसे–हरेला, घुघुतिया और फूलदेई संक्रान्ति व अन्य छोटे त्यौहार को आज भी मनाते हैं और अपनी वेश–भूषा का उपयोग करते हैं। कुमाऊँ में झोड़े, चांचरी नृत्यों का भी प्रयोग किया जाता है। ज्यादातर लोगों में मूल बोली को आज भी बोला जाता है जिसमें 84 प्रतिशत उत्तरदाता आज भी गढ़वाली व कुमाऊँनी बोलते हैं।

विस्थापन के बाद आज भी परिवारों में लोक–नृत्यों का घरों में शुभ–अवसरों पर करते हैं। ग्रामीणवासी आज भी अपने लोक नृत्यों को नहीं भूले हैं। गांव में झोड़े व लोक गीतों को गाया जाता है। पुरूषों व महिलाओं को लोक

नृत्यों को करने में बहुत आनन्द आता है। 68 प्रतिशत उत्तरदाता लोक नृत्यों के बारे में जानते हैं। परन्तु 32 प्रतिशत युवा पीढ़ी लोक नृत्यों के बारे में आज भी नहीं जानते हैं। उसका मुख्य कारण जीवन में व्यस्तता दिखाई देती है। अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ है कि विस्थापित परिवारों में उत्तरदाताओं द्वारा लोक कलाओं को 84 प्रतिशत ही जानते हैं। जैसे– ऐपड़, हाथी, मोर, जानवरों का चित्र घरों व दीवारों में डकेरा जाता है। 16 प्रतिशत लोग आज भी लोक कलाओं को भूलते जा रहे हैं। लोक संस्कृति (जागर) को ग्रामीण विस्थापित परिवारों मे 59–64 आयु वर्ग के उत्तरदाता द्वारा सुख व दुःख में जागर को लगाया जाता है। जागर को कुमाऊँनी व गढ़वाली परिवार अपने मूल–संस्कृति में अपनाते हैं। जिससे वह अपने पूर्वजों की याद में गायन द्वारा करते है। लोक संस्कृति जागर के बारे में 96 प्रतिशत जानते हैं। 04 प्रतिशत परिवार जो शहरों में जाकर बस गये हैं वह जागर नहीं लगाते है। जागर को विस्थापित परिवार में ज्यादा उपयोग किया जाता है। मूल स्थान गढ़वाल, कुमाऊँ तथा अन्य परिवार जो कि इन गांवों कुमाऊँ से 24 प्रतिशत व अन्य 4 प्रतिशत परिवार मूल स्थान से आये हैं। सारणी संख्या 4.21 में मूल स्थान से आने पर अपनी सभी सामाजिक व सांस्कृतिक प्रस्थिति के बारे में जानते हैं और अपनी संस्कृति को अपनाते हैं।

विस्थापित परिवारों में विस्थापन के कारण स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। पूर्व में जिस स्थान पर लोग रहते हैं। वहाँ की जलवायु और वातावरण के अनुकूल उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है और विस्थापन के बाद कई बार यह देखने को मिलता है कि वह नये स्थान पर अपने को नहीं ढाल पाते हैं जिससे उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Society is the web of Social relationship R.M. Maclveer and C.H. Page, Society, the Macmillan Co. Ltd, London 1953, P-5.
2. Retuer, Hand book of Sociology, Dryden press Inc, New Delhi, 1941 P-157.
3. Kingsley Davis: op cit., P-1.
4. Edward B. Tyler : Primitive Culture, vol-I, P-1.
5. R. N. Tripathi, 2010 “Indian Social Problems” D.P.S. Publishing House.